himadri 5
DOON LIBRARY & Research Centre
March, 2011

दून रीडिंग्स में 'गिर्दा'

दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के तत्वाधान में पेंगुइन बुक्स इंडिया और यात्रा बुक्स के सहयोग से पिछले साल अप्रैल की 2, 3 व 4 तारीख को एक तीन दिवसीय साहित्योत्सव का आयोजन हुआ। 'दून रीडिंग्स' हिमालय की गूंज के नाम से यह कार्यक्रम देहरादून के होटल अकेता में आयोजित किया गया। इस साहित्योत्सव में उत्तराखण्ड के परिवेश से जुड़े रचनाकारों सहित देश के नामचीन साहित्यकारों ने शिरकत की, जिनमें नैनीताल के प्रतिभाशाली रचनाकार गिरीश तिवाड़ी 'गिर्दा' भी मौजूद थे। 'गिर्दा' की पहचान फिं जनकवि व रंगकर्मी के रूप में ही नहीं अपितु पहाड़ की संस्कृति और साहित्य पर गहरी पकड़ रखने वाले एक जानकार व्यक्ति के रूप में भी थी। गिर्दा ज्यादातर नैनीताल से ही जुड़े रहे पर उनके विचार व कामों का विस्तार पहाड़ के गांव-कोनों तक ही नहीं वरन देश विदेश के लोगों तक भी फैला था। रोटी के जुगाड़ की खातिर मैदान में रिक्शा चलाने से लेकर नौटकीं में काम करने और क्लर्क की मामूली नौकरी करने तक न जाने उन्हें कितने पापड़ बेलने पड़े।बाद में गीत और नाटक प्रभाग की सरकारी नौकरी भी गिर्दा को रास नहीं आयी। उनके भीतर बैठे संवेदनशील व विद्रोही कवि ने उन्हें वहां की चहारदीवारी के भीतर कैद नहीं होने दिया और अन्ततः वहां से भी उन्होंने स्वैच्छिक अवकाश ले लिया और स्वतन्त्र ढंग से अपने रचना कर्म में जुट गये। इन तमाम बातों से हटकर 'गिर्दा' में जो सबसे खास विशेषता थी, वह थी उनकी आत्मीयता, संवेदनशीलता और हद से भी

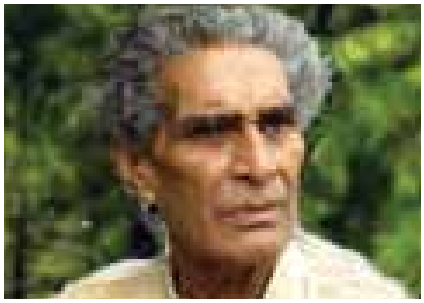

(10 सितम्बर 1942-22 अगस्त 2010)

बढ़कर फक्कड़ता। उनकी आत्मीयता का संभवतः इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है जब स्वास्थ्य सम्बन्धी तमाम दिक्कतों के बाबजूद भी वे हमारे मात्र एक आग्रह पर 'दून रीडिंग्स' में शिरकत करने को तुरन्त राजी हो गये।

दो अप्रैल की शाम को जब इस साहित्योत्सव के उद्घाटन सत्र वाले कार्यक्रम समापन के करीब पहुंच रहे थे तब किसी ने बताया कि गिर्दा प्रो0 पुष्पेश पंत के साथ आ चुके हैं। साढ़े नौ के आसपास का समय था। दिल्ली से देहरादून तक टैक्सी में सफर करने कारण गिर्दा बुरी तरह थके मांदे लग रहे थे। हमने तुरन्त ही उनके मन माफिक भोजन की व्यवस्था कर उन्हें आराम के लिये उनके कमरे तक पहुंचा दिया।

अगले दिन मध्याह्न के बाद वाले सत्र में शाम को उत्तराखण्ड के कवियों का शानदार काव्य पाठ हुआ। संचालन की कमान प्रो0 शेखर पाठक ने संभाल रखी थी। पहाड़ के बसंत का जिक्र आते ही इशारा गिर्दा की ओर हुआ।बस फिर देर ही किस बात की थी गिर्दा ने माइक लपकते हौ गीत शुरू कर दिया। एक-एक कर गीतों के मोहिल सुर धीरे-धीरे हॉल में अपना रंग बिखेरने लगे अद्भुत लय व ताल से सारोबार इन गीतों को लोग तन्मयता से सुनने में मगन थे। गिर्दा का पहला गीत पहाड़ के बसंत पर आधारित था। गिर्दा के ही शब्दों में गीत का मुख्य भाव यह था कि 'पहाड़ों पर बसंत का उल्लास छा गया है और यह बसंत लोक नायिका राजुला मालूशाही के अन्दाज में हिमालय से नीचे की ओर उतर रहा है..... धीरे... ..... धीरे.....न कि धम्म से।

उत्तरकाशी से काली कुमूं तक
क्या सुन्दर छाजी रै मेरी बाड़ी
क्या खित्तै हंसे छ पारवती
लाल बुरांश का फूल पिछाड़ी
तराई-भाबर, माल-हिमाल
फूलि जांछ ह्यूनै जसि प्यारी
रात उजाली घाम निमैलो
डाना-काना में केसिया फूलो
शिवज्यू कै मारी मुठ्ठी रंगै की
सार हिमाल है गोछ रंगीलो
हुलैरि ऐगे परी बसंत की
फोकिगो जां तां रंग पिंगलो
ध्यान टूटो छार फोकि जोगी का
छार-भभूत तकै पिंगली गो.....

(अर्थात उत्तरकाशी सें लेकर काली कुमांऊ तक के इलाके में फैले खेत व क्यारियां क्या सुन्दर सज रहीं हैं। अहा! देखो तो जंगल में खिले लाल बुरांश की ओट में पार्वती कैसे खित्त करके हंस रही है। तराई-भाबर व माल से लेकर उंचे हिमालय तक यह शिशिर ऋतु अति प्यारी लग रही

FROM THE DIRECTOR

This time we have been a bit late in bringing Himadri to our members. Our sincere apologies. We got caught up in a myriad other small things and kept pushing back the publication of the newsletter. Somewhat similar to the fate of trains running late in our railway. Once a train gets delayed it continues to get pushed back and other trains get precedence over it so that the delay only gets worse over time. In the colourful language used by subordinate railway staff "gadi pit jati hai".

Our library "train", however, has been chugging along merrily since our last issue. Despite a severe shortage of space we have not given up on acquiring new books. Our collection now stands at 13,500 (and growing). Those who may have visited the library recently would know that there are books all over the place. Our membership too has reached 840. Recently we introduced life membership. A number of people have come forward and taken life membership. We welcome all these new members to our family.

Our quest for additional space for the library has intensified of late. A proposal to put up additional construction at the existing premises so that we can have more space for stacks, a larger reading room and even a small hall for our functions is being considered at the appropriate level. Hopefully, we should have some good news to share with you in the near future. The proposed cultural centre, the foundation stone for which was laid by the Governor on November 12, 2010 at a site adjacent to the Institute of Hotel Management, is to be the permanent home of the library.

We are constantly on the search for ways to provide better service to the reading public of Dehradun. We have long felt that we should do something to reach out to senior citizens who find it difficult to come to the library. Dehradun, as is well known, has been a preferred retirement haven for a large number of people. It was once described as a town of "green hedges and grey hair". Sadly, the green hedges are fast disappearing. Fortunately, the grey hair are still in our midst. We are now seriously working on providing the services of a mobile library to go to those who cannot come to the library. We plan to roll out this service in the next six to eight weeks. We would like to have suggestions from our readers, especially those among them who are senior citizens, on what kind of books and other materials they would like the mobile library to stock and which areas should be served in the first phase (given our limited resources we can only serve a few localities in the city, to begin with).

The library has so far focussed on the written word only. We do

have a few video discs, mainly documentary films on the Himalayas. We feel we should build a good collection of more such DVDs as also good music CDs. We would like feedback from our members/potential members what they think of this idea, and if they are in favour then what kind of films and music they would like the library to stock. Given the fact that there are a number of video shops hiring out commercial films in the city, I do not think the library should go in for this category.

We will eagerly await your response. Please do get in touch with us, as we do want to hear from you. Good bye for now – till our next issue that is, which, we assure you, will not delayed too much.

B. K. Joshi

है। इन दिनों रात उजाली है और दिन का घाम निमैला हो रहा है। दूर डानों -कानों में केशिया फूला हुआ है। ऋतुराज बसंत हिमालय से नीचे की ओर धीरे.. धीरे उतर रहा है। बसंत ने जैसे ही मुठ्ठी भर रंग भगवान शिव पर उड़ेला तो सहसा उनका ध्यान टूट गया और उनके बदन पर पुती हुई भभूत भी पीले रंग में रंग गयी। कुछ ही क्षणों में पूरा हिमालय बसंती रंग से दमक उठा)

बसंत के इस गीत के बाद गिर्दा का दूसरा महत्वपूर्ण गीत था - 'ओ हो रे आय हाय रे दिगौ लालि!' इस गीत में बरसात, छानी खरकों से उठता धुंआ, ब्याही हुई गाय दूध दुहने वाली महिला का प्रफुल्लित मन, गीली लकड़ी, छोंके गये साग की निराली गंध व कांसे की थाली के समान आसमान में दिख रहे चांद का जो जीवन्त चित्रण गिर्दा ने किया वह वाकई अद्‌भुत था। सभागार में बैठे लोगों पर गिर्दा के गाये गीत अपना पूरा जादुई असर दिखा रहे थे।

ओ हो रे आय हाय रे
ओ हो रे ओ दिगौ लालि!
छानी खरिकों में धुंआ लगा है
ओ हो रे आय हाय रे
ओ हो रे ओ दिगौ लालि!
ठंगुले की बाखली, किलै पंगुरी है
द्विदां-द्विदां की धार छूटी है
दूहने वाली का हिया भरा है
ओ हो रे आय हाय रे
ओ हो रे ओ दिगौ लालि!
मुश्किल से आमा का चूल्हा जला है
गीली है लकड़ी, गीला धुंआ है
साग क्या छौंका कि पूरा गौं महका है
ओ हो रे आय हाय रे, गन्ध निराली
कांसे की थाली सा चांद टंका है
ओ हो रे आय हाय रे, शाम निराली
ओ हो रे आय हाय रे, सांझ जुन्याली
जौंया मुरूली का शोर लगा है
ओ हो रे आय हाय रे, लागी कुतक्याली

गिर्दा ने मात्र इन दो गीतों से नहीं बल्कि कुछ और गीतों के माध्यम से भी पहाड़ के जनजीवन, वहां के लोगों के संघर्ष व्यथा को श्रोताओं के सम्मुख रखा। रात को डिनर के वक्त भी गिर्दा पूरी तरह अपनी मौज में थे। खराब स्वास्थ्य के बाबजूद भी वे मेहमानों के आग्रह पर लगातार कुमांऊ की होलियों से लेकर फैज की पक्तियों को सुनाते जा रहे थे। भले ही गिर्दा आज सशरीर हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के दून रीडिंग्स कार्यक्रम में उनके गाये गीत लम्बे समय तक हम लोगों के जुबान पर बने रहेंगे। उनका अपनापन और फक्कड़पन हमें हमेशा याद आता रहेगा।

Girda in Doon Reading's

Folk poet and theatre personality Girish Tiwari popularly known as 'Girda' breathed his last on 22nd August, 2010. Girda embodied the topography and the culture of the Uttarakhand hills in his personality. He started his career as a rikhshaw puller and a folk artiste and then worked in the Song and Drama Division of the Central Government. He later quit his job. Despite his failing health recited his poetry at the Doon Readings in May, 2010 and enthralled the audience with his simple style of recitation. The atmosphere of the hills would come alive when he recited his poetry.

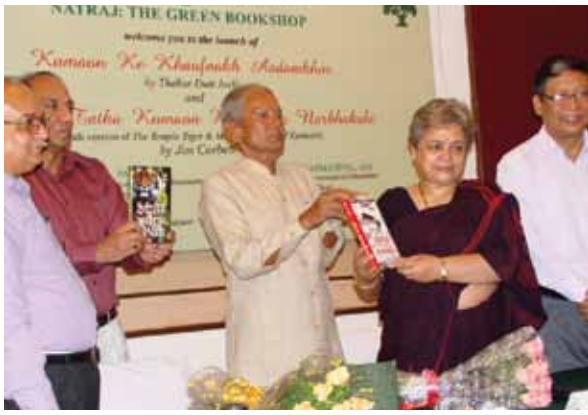

मृणाल पाण्डे ने किया पुस्तकों का विमोचन

दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र तथा नटराज पब्लिशर्स के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 31 जुलाई 2010 को **दैवी शेर तथा कुमाऊं के अन्य नरभक्षी** व **कुमाऊं के खौफनाक आदमखोर** नामक पुस्तकों का विमोचन होटल मधुबन के सभागार में किया गया। मुख्य अतिथि के रुप में मौजूद प्रख्यात पत्रकार एवं प्रसार भारती की अध्यक्ष मृणाल पाण्डे ने इन पुस्तकों का विमोचन किया। उल्लेखनीय है कि कुमाऊं के खौफनाक आदमखोर पुस्तक उत्तराखण्ड के चिरपरित शिकारी और मिनी जिम कार्बेट के नाम से मशहूर ठाकुर दत्त जोशी द्वारा लिखी गयी है। जबकि दैवी शेर तथा कुमाऊं के अन्य नरभक्षी पुस्तक नरेश चन्द्र मधवाल ने लिखी है, जो जिम कार्बेट के मूल अंग्रेजी पुस्तक **द टैम्पल टाईगर एण्ड मोर मैन इटर्स ऑफ कुमाऊं** का हिन्दी अनुवाद है।

पुस्तकों के विमोचन के बाद अपने सम्बोधन में मृणाल पाण्डे ने कहा शिकारी ठाकुर दत्त जोशी की पुस्तक में इंसान और पशुओं के मध्य सहज साहचर्य की समझ के रोचक व ज्ञानवर्धक विवरण हैं। उन्होंने कहा कि उपरोक्त दोनों पुस्तकें वन्यजीवों

के जीवन का बेहतर चित्र प्रस्तुत करती हैं। अनियोजित तरीके से वन सम्पदा के साथ किये जा रहे खिलवाड़ के कारण वन्यजीवों पर मडरा रहे संकट पर उन्होंने कहा कि सेव द टाईगर से ज्यादा जरुरी है सेव द जंगल। मृणाल पाण्डे ने कहा कि अगर वन ही न रहें तो वनचर कैसे रह पायेंगे, ऐसे हालत में न बाघ रह पायेंगे और नहीं अन्य दूसरे जानवर जो विलुप्ति के कगार पर हैं। उन्होंने कहा इंसानी जीवन के लिये खतरे का पर्याय बन रहे नरभक्षी बाघों को मारना शिकारी का मानवीय कार्य है, परन्तु अपने स्वार्थ पूर्ति के लिये उन्हें अवैध ढंग से मार गिराना अपराध के साथ-साथ एक नितान्त कायरतापूर्ण व्यवहार है। मृणाल पाण्डे ने कहा कि वन और वन्यजीवों से जुड़े अधिकारियों को वन और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपनी योजनाएं लक्षित करनी चाहिए।

विमोचन समारोह की अध्यक्षता तत्कालीन मुख्य सचिव एन0एस0 नपलच्याल ने की। पूर्व मुख्य सचिव व तृतीय वित्त आयोग के अध्यक्ष इन्दु कुमार पाण्डे, प्रमुख वन संरक्षक आर0वी0एस0 रावत भी इस अवसर पर मंच में मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने किया। प्रो0 बी0के0 जोशी ने कहा कि दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र इस तरह के विविध आयोजनों से आम लोगो में पुस्तकों के प्रति जागरुकता पैदा करने का प्रयास करता आ रहा है। विमोचन समारोह में लेखक ठाकुर दत्त जोशी व नरेश चन्द्र मधवाल के अलावा देहरादून नगर के साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षाविद, बुद्धिजीवी, स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रतिनिधि, तथा दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र में कार्यरत सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम के समापन पर नटराज पब्लिशर्स के प्रमुख उपेन्द्र अरोड़ा ने सभागार में उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया।

Mrinal Pande, Chairperson, Prasar Bharti Board comes to Dehradun

Mrs Mrinal Pandey came to Dehradun on 31st July, 2010 at the joint invitation of the Doon Library and Ressearch Centre and Natraj Publishers to release a Hindi translation of Jim Corbet's, **Temple Tigers and More Man Eaters of Kumaon**, done by Naresh Chandra Madhwal and Thakur Dutt Joshi's, **Kumaon ke Khaufnak Adamkhor**. Both these books have been published by Natraj. She said that in order to save the tigers it is more important to save the jungles. Only then could the tigers be saved. There has to be a very clear policy in this regard. The release function was presided over by Shri NS Napalchiyal, Chief Secretary of Uttarakhand, Shri Indu Kumar Pandey, Chairperson Third State Finance Commission and Shri RVS Rawat, Principal Chief Conservator of Forests were the other distinguished guests on this occasion.This function was organized by Natraj Publishers and DLRC.

पुस्तक समीक्षा -1

कुमाऊं के खौफनाक आदमखोर

पुष्पा की दादी उसके साथ
बाहर आंगन में थी
और उसकी मां रोटी बना रही थी।
अकस्मात मकान की सीढियों की ओटमें
बैठा गुलदार उछल कर आया
और पुष्पा को मुंह से पकड़ कर ले गया।

कुमाऊं के खौफनाक आदमखोर नामक पुस्तक उत्तराखण्ड के चिरपरित शिकारी, अचूक निशानेबाज और मिनी जिम कार्बेट के नाम से मशहूर श्री ठाकुर दत्त जोशी की लिखी नौ शिकार कथाओं का संग्रह है। वन विभाग में नौकरी करने के दौरान उन्होने जोखिम उठाकर कुमाऊं व गढ़वाल के पहाड़ी इलाकों व तराई भाबर में नरभक्षी शेरों तथा तेंदुओं के आतंक से कई गांवों को मुक्ति दी।अपने शिकार के दौरान घटित तमाम घटनाओं की तस्वीर उन्होंने दिलचस्प तरीके से इस पुस्तक में पेश की है। पलक झपकते ही मासूम छोटे - छोटे बच्चों व गाय - बकरियों को तेंदुए द्वारा अपना निवाला बना लेने, मां - बाप का रोना - बिलखना,गांव क्षेत्र में दहशत तथा गांव वालों का तेंदुए से साहस के साथ सामना करने जैसे कई जीवन्त दृश्यों का चित्रण श्री जोशी ने इस पुस्तक में किया है, जिसे पढ़कर पाठक के दिल में खुद ब खुद रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वन्य जीवों की आदतों व उनके स्वाभाविक गुणों के बारे में अपने अनुभव के आधार पर श्री ठाकुर दत्त जोशी ने कई जानकारियां देकर पाठकों का ज्ञान बढ़ाया है। इस पुस्तक में जिन नौ शिकार कथाओं का संग्रहण किया है वे हैं-पिजड़े में मोहिनी, मौलेखाल का नरभक्षी गुलदार, सूखास्त्रोत चौफुला का आदमखोर शेरों का जोड़ा, पिथौरागढ़

का निर्भीक आदमखोर गुलदार, खांकरा का आदमखोर गुलदार, लखनऊ कुकरैल का आदमखोर शेर, कतनिया का कातिल गुलदार, रातीघाट का आदमखोर गुलदार तथा चंपावत का आदमखोर गुलदार।

कुमाऊं के खौफनाक आदमखोर पुस्तक के लेखक श्री ठाकुर दत्त जोशी बचपन से ही साहसी और निर्भीक रहे हैं। बाल्यावस्था में एक बार जंगल में जब इनके बैल पर गुलदार ने हमला बोल दिया था तो इन्होंने पत्थरों से मार-मार कर उसे भागने को विवश कर दिया। वन विभाग में नौकरी मिलने के बाद उनका जंगल व वन्य प्राणियों से अटूट जुड़ाव बना रहा। मूल रुप से बेतालघाट (नैनीताल) निवासी श्री ठाकुर दत्त जोशी सेवानिवृत होने के बाद देवीरामपुर (कोटाबाग) में रह रहे हैं।

पुस्तक समीक्षा -2

दैवी शेर तथा कुमाऊं के अन्य नरभक्षी

खड्ड को पार करके शेरनी जिसके एकदम पीछे शावक चल रहे थे, मेरी तरफ आई और मेरे पेड़ के पीछे से गुजर कर एक सपाट जमीन के टुकड़े पर लेट गयी.....

दैवी शेर तथा कुमाऊं के अन्य नरभक्षी प्रसिद्ध शिकारी एवं प्रकृति प्रेमी जिम कार्बेट के मूल अंग्रेजी पुस्तक **द टैम्पल टाईगर एण्ड मोर मैन इटर्स ऑफ कुमाऊं** का हिन्दी अनुवाद है। पुस्तक का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद श्री नरेश चन्द्र मधवाल ने किया है। जिम कार्बेट ने उत्तराखण्ड में आतंक के पर्याय बने अनेक नरभक्षी बाघों को मार कर स्थानीय गांव वालों को राहत देने में मदद की थी। इन नरभक्षी बाघों के शिकार के दौरान जिम कार्बेट ने कई बार अपनी जान भी जोखिम में डाली। एक सहृदय मानव प्रेमी होने के कारण लोग उसे देव पुरुष के रुप में याद करते थे और प्रेम से स्थानीय लहजे में कारपिट साहब कहते थे। जिम कार्बेट की पुस्तकों में उत्तराखण्ड के निवासियों के जन-जीवन, आस्था और विश्वास, स्थानीय पेड़-पौधों व जंगली जानवरों के स्वभाव तथा गुणों का व्यापक वर्णन देखने को मिलता है। दैवी शेर तथा कुमाऊं के अन्य नरभक्षी पुस्तक में वर्ष 1910 से 1938 के मध्य शिकार के दौरान घटी विविध रोमांचकारी घटनाओं का सजीव चित्रण हुआ है। जिसमें दैवी शेर, मुक्तेश्वर की नरभक्षी, पनार का नरभक्षी, चूका का नरभक्षी व तल्लादेश की नरभक्षी शीर्षक से पांच शिकार कथाएं शामिल हैं। रेखाचित्रों के सुन्दर अंकन से पुस्तक को जीवन्त बनाने का प्रयास किया है।

जिम कार्बेट की पुस्तक द टैम्पल टाईगर एण्ड मोर मैन इटर्स ऑफ कुमाऊं के हिन्दी अनुवादक श्री नरेश चन्द्र मधवाल वर्त्तमान में उत्तराखण्ड वन विकास निगम

में अधिशासी प्रबन्धक, ईको टूरिज्म, टिहरी जोन देहरादून में कार्यरत हैं। वन भ्रमण, पर्यटन व पर्यावरण में इनकी विशेष अभिरुचि है।

बाघों को संरक्षण प्रदान करने वाली अग्रणी संस्था दि कार्बेट फाउण्डेशन की ओर से प्राप्त आर्थिक सहयोग से इन दोनों पुस्तकों का प्रकाशन देहरादून के जाने - माने प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता नटराज पब्लिशर्स ने किया है।

कलापिनी कोमकली का भारतीय शास्त्रीय गायन

दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र तथा स्पिक मैके की ओर से 27 अगस्त, 2010 को वेल्हम गर्ल्स् स्कूल के सभागार में प्रसिद्ध गायिका कलापिनी कोमकली के भारतीय शास्त्रीय गायन का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। भारतीय शास्त्रीय गायन के जाने माने हस्ताक्षर कुमार गन्धर्व की पुत्री कलापिनी कोमकली का जैसे ही गायन शुरु हुआ वैसे ही सभागार में उपस्थित श्रोतागण उनके सुर सरिता में डुबकी लगाने लगे। उन्होंने "मैं तो से....." भजन के साथ ही "कुदरत की....." नामक निर्गुण भजन की रचना प्रस्तुत की। अपनी विशिष्ट गायन शैली में प्रस्तुत रचनाओं की रस वर्षा का उपस्थित श्रोतागणों ने भरपूर आनन्द उठाया। कलापिनी कोमकली ने अपने पिता कुमार गन्धर्व की भी रचनाएं श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत की। कार्यक्रम के समापन पर दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने कलापिनी कोमकली एवं उनके साथी कलाकारों को पुष्पगुच्छ व शॉल भेंट कर सम्मानित किया। प्रो0 जोशी ने इस मौके पर कहा कि कलापिनी कोमकली द्वारा प्रस्तुत सुरवर्षा का यह कार्यक्रम देहरादून वासियों को हमेशा याद रहेगा। कार्यक्रम के दौरान वेल्हम गर्ल्स् स्कूल की प्रधानाचार्य, छात्राएं व, अध्यापिकाओं के अलावा दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के

सलाहकार राजन बृजनाथ व देहरादून के प्रबुद्ध व्यक्ति व संगीतप्रेमी मौजूद थे।

Music Recital by Kalapini Komkali

The DLRC in collaboration with SPICMACAY organized a recital of classical music at Welham Girls School. The performer was Kalapini Komkali, the daughter of the legendary classical vocalist Kumar Gandharva. She enthralled the audience with her music for about two hours as she sang many compositions of her father. The DLRC honoured her by presenting a boquet of flowers and a shawl to her. The presentation was made by Dr BK Joshi.

संस्मरण

डॉ. रंगनाथन जी से एक यादगार मुलाकात

लाइब्रेरी साइन्स का कोर्स करने के बाद मैंने लखनऊ से आकर देहरादून की नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विजुअली हैण्डीकैप्ड की नेशनल लाईब्रेरी में नौकरी की। बाद में वहाँ से में आगे का कोर्स करने मैं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय चला गया था। हम लोग दिसम्बर 1969 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के टूर प्रोग्राम में बनारस से कलकत्ता की नेशनल तथा अन्य लाइब्रेरियों को देखते हुए मद्रास पहुंचे। मद्रास की पब्लिक लाईब्रेरी तथा अन्य लाइब्रेरियों को देखने के बाद हम लोग बंगलौर में डॉ0 रंगनाथन जी के डाक्यूमेंटेशन रिसर्च ट्रेनिंग सेण्टर में पहुंचे।

इस पूरे टूर में हम सब छात्रों को सबसे ज्यादा उत्सुकता रंगनाथन जी को देखने और उनसे मिलने की थी। डॉ0 रंगनाथन जी ने अपने कार्यालय में एक-एक कर हर एक छात्र का साक्षात्कार लेना शुरू कर दिया। हम सभी बहुत उत्सुकतावश साक्षात्कार से लौटकर आने वाले छात्रों से यह पूछते थे कि डॉ0 रंगनाथन जी ने क्या-क्या प्रश्न किये, और तुमने उनका क्या उत्तर दिया।

करीब-करीब सभी छात्रों का एक ही तरह का जबाब होता था कि डॉ0 रंगनाथन बुरी तरह से डांट रहे हैं कि तुमने बी0ए0, एम0ए0 करके यह प्रॉफेशनल कोर्स को ही क्यों चुना? लाईब्रेरी स्टाफ को तो एक क्लर्क जैसा दर्जा ही मिलता है, जो कि तुम बगैर लाईब्रेरी कोर्स करने पर भी पा जाते। लाईब्रेरी कोर्स में अत्यधिक खर्चा होता है, और उसके बदले में संस्थानों को कोई प्रत्यक्ष फायदा नहीं दिखाई देता है। पाठक भी ज्यादातर लाईब्रेरी स्टाफ से नाराज रहते हैं क्योंकि सीमित संसाधनों से सभी पाठकों की जरूरतों या मांगों को पूरा नहीं किया जा सकता है।

कुछ छात्रों से डॉ0 रंगनाथन जी ने कहा कि जब तुमने बी0ए0, एम0ए0 कर ही लिया था तब तुमने बी0एड0 जैसे कोर्स में एडमिशन क्यों नहीं लिया। अध्यापक की नौकरी एक पुस्तकालयाध्यक्ष के मुकाबले कहीं ज्यादा कमाई वाली होती है। हर संस्थान में सैकड़ों अध्यापक होते हैं, जबकि पुस्तकालय में एक या दो ही पद होते हैं, ऐसे में पुस्तकालय विज्ञान वालों को नौकरियां कैसे मिलेंगी।

छात्रों से इस तरह की बातों को सुनकर मैं डरा और सहमा अन्दर गया। डॉ0 रंगनाथन जी के पूछने पर मैंने बतलाया कि मैं नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विजुअली हैण्डीकैप्ड की नेशनल लाईब्रेरी में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्य कर रहा हूं, और वहां से डेपुटेशन पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में आगे की पढ़ाई करने आया हूं। डॉ0 रंगनाथन जी का अगला सवाल था कि आपकी लाईब्रेरी विजुअली हैण्डीकैप्ड को क्या क्या सेवायें देती है मैंने जबाब दिया कि जो विजुअली हैण्डीकैप्ड बच्चे पढ़ते हैं उनके साथ सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक ब्रेल की किताबों का लेन-देन करते हैं, तथा उन्हें अन्य तरीकों से मदद करते हैं। बच्चों के अलग-अलग कैम्पस जो करीब साढ़े तीन मील के दायरे में हैं वहां सप्ताह में एक बार किताबों को जीप में भर कर अलग-अलग दिनों में लाकर उन्हें इशू करते हैं और पिछले हफ्ते दी गयी किताबों को वापस ले आते हैं। इस तरह यह क्रम चलता रहता है। इसके अलावा देहरादून से बाहर भारत में रह रहे विजुअली हैण्डीकैप्ड को भी हमारी लाईब्रेरी निशुल्क सेवा देती है। उन्हें हम अपनी किताबों की लिस्ट भेज देते है। वे उसमें से अपनी पसन्द की किताबों की सूची हमें भेज देते हैं। हम दो से लेकर चार किताबें डाक से भेज देते हैं। किताबें वापिस आने पर उनकी लिस्ट के अनुसार दूसरी नई किताबें भेज देते हैं। इस तरह से हमारी लाइब्रेरी भारत के पढ़े-लिखे विजुअली हैण्डीकैप्ड को किताबें उनके घर डाक से पहुंचाती है।

डॉ0 रंगनाथन साहब मेरा यह जवाब सुन कर अत्यधिक खुश हो गये और हमारे बी0एच0यू0 के अध्यापक से मेरे सामने ही कहने लगे कि आप लोगों ने इनका बहुत सही चयन किया है इनकी लाइब्रेरी पूरे भारत के विजुअली हैण्डीकैप्डों को पढ़वाने का अच्छा काम कर रही है।

इस तरह हमारा बी0एच0यू0 के छात्रों दल पुणे, मुम्बई व दिल्ली होते हुए वापिस बी0एच0यू0 पहुँच गया। 40 साल से भी ज्यादा पुराना यह एजुकेशनल टूर आज भी मेरे जीवन की मधुर यादों से भरा है।

- के0 सी0 सक्सेना

Ranganathan Day Celeberated

On 11th August 2010 the librarians of all the major libraries of Dehradun assembled to pay tribute to the father of

library science in India. The proceedings were concluded with Dr BK Joshi commenting that the objective of the creation of a knowledge society can only be realized if there are good and well maintained libraries. The states of North India are lagging behind in this respect. From the Doon Library, Mrs Suman Bhardwaj, Shri Khushi Ram and Mrs Meenakshi Kukreti Bhardwaj were the ones to pay tribute. The others were Ms CK Mamik from Survey of India, Shri DK Pandey from Indian Institute of Petroleum, Shri VP Singh from Wadia Institute of Himalayan Geology and Sukriti Arya from MKP (PG) College.

डॉ. रंगनाथन की 118 वीं जयन्ती मनायी गयी

भारतीय पुस्तकालय विज्ञान के जनक के रुप में विख्यात स्व0 डॉ0 रंगनाथन की 118 वीं जयन्ती पर दिनांक 11 अगस्त 2010 को वन विभाग के मंथन सभागार में उनका भावपूर्ण स्मरण किया गया। दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में वक्ताओं ने डॉ0 रंगनाथन के विचारों, उनकी सोच तथा भारत सहित समूचे विश्व में पुस्तकालय विज्ञान में दिये गये उनके अमूल्य योगदान पर प्रकाश डाला। दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने दीप प्रज्जवलन और डॉ0 रंगनाथन जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। प्रो0 जोशी ने उनके द्वारा किये गये तमाम उल्लेखनीय कार्यों का जिक्र करते हुए कहा कि उनके विचारों से प्रेरणा लेकर उनके कामों को आगे बढ़ाने व उनमें नवीनता लाने के प्रयास करने चाहिये। उन्होंने आज के कम्प्यूटर दौर में भी पुस्तकालय की उपयोगिता बताते हुए कहा कि पुस्तकें सही मायने में हमारी मार्गदर्शक होती हैं। इस कार्यक्रम में दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की तकनीकी समिति के सदस्यों में भारतीय सर्वेक्षण विभाग की पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमती चरनजीत कौर, वाडिया हिमालय भू-विज्ञान संस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री वी0पी0 सिंह ने स्व0 डॉ0 रंगनाथन की आत्मकथा व उनके दर्शन पर व्याख्यान दिया। दून पुस्तकालय की श्रीमती सुमन भारद्वाज, श्रीमती मीनाक्षी कुकरेती व श्री खुशी राम ने डॉ0 रंगनाथन की कुछ पुस्तकों से चयनित अंशों का वाचन किया।

डॉ0 रंगनाथन जी से यादगार मुलाकातों के कुछ अनुभव दून पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष के0पी0 सक्सेना ने सुनाये। इसके अलावा श्री मंगला प्रसाद गुप्ता, डॉ0 शोभा शर्मा, अनीता सकलानी व स्वीकृति आर्य ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन आई0आई0पी0ए0 के तकनीकी अधिकारी डॉ0 डी0के0 पाण्डे ने किया। इस अवसर पर विविध पुस्तकालयों से जुड़े लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के सलाहकार राजन बृजनाथ ने उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया।

A Memorable Meeting with Dr Ranganathan

After successfully completing a course in Library Science I joined the National Institute for the Visually Handicapped at Dehradun as a librarian. After that I went to do a Advanced Course at the Banaras Hindu University.In 1959 we were taken on an all-India tour to visit different libraries of the country. After visiting the National Library in Calcutta we went to Madras and finally to Bangalore to meet Dr Ranganathan, who has been regarded as the father of Library Science in India. All the students who met him were subjected to a scolding. He said that why have they chosen to become a librarian. It is a thankless job and the openings are very few. In educational institutions the students as well as the faculty show scant respect to the library staff.

When I went to meet him and told him where I work he straight away asked me as to what facilities we are offering to the persons who are visually handicapped. I told him that braille books are issued to students. Apart from that we even send books to the visually handicapped persons on demand through post all over India. After those books are returned a different set is sent to them. Dr Ranganathan was very impressed with the work which we were doing.

- KC Saxena

हेम सिंह दरियाल का बी०एच० यू० के पुस्तकालय में चयन

दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र में कार्यरत हेम सिंह दरियाल की बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पुस्तकालय सहायक के पद पर नियुक्ति होने से दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र में कार्यरत सदस्यों ने उन्हें बधाई दी है। संस्थान में आयोजित सादे समारोह में निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

Hem Singh Daryal goes to BHU

After serving the Doon Library as an Assistant Librarian with distinction for over three years Hem Singh Daryal has been selected by the Banaras Hindu University.He was given a warm send off by the DLRC staff.

"उत्पादन सूचकांक" या "सुख सूचकांक" : क्या विकल्प व्यावहारिक है ?

– जगदीश चन्द्र पंत

हिमाद्रि के पिछले अंक में इस विषय पर एक विचारोत्पादक सम्पादकीय डॉ0 बी0के0 जोशी जी द्वारा लिखा गया था। पहले तो भूटान सरकार द्वारा अपनाई जा रही "सुख सूचकांक" की संकल्पना का पूरा विवरण प्राप्त किया जाना अपरिहार्य होगा। वे इसे किस प्रकार व्यावहारिक बनाने जा रहे हैं ? यदि वे इसे अपना सकते हैं तो उत्तराखण्ड सरकार के लिये एक चुनौती होगी कि इसे क्यूं नहीं अपना सकते हैं।

अब विचार किया जाय कि सार्वजनिक सुख और व्यक्तिगत सुख में क्या कोई मौलिक अंतर है? यदि है तो वह क्या है और यदि नहीं है तो उसकी परिभाषा क्या होगी? यह परिभाषा ऐसी होनी चाहिए कि उसके मापदंडो को नापा जा सके। कुल मिला कर अब समस्या केवल सुख की ऐसी परिभाषा निर्मित करना है जिसके मापदंडो को आसानी से पाया जा सके। आज के दिन सरकारी काम काज की अविश्वनीयता के रहते इस परिभाषा को ऐसा बनाना होगा जिससे यह सुख की संकल्पना सरकारी आंकड़ों के भ्रमजाल में उलझ कर न रह जाय। यह परिभाषा बनाना अर्थशास्त्रियों का काम तो है ही, इसे बनाने में कवियों का भी योगदान होगा। दुर्भाग्य से मैं न तो अर्थशास्त्री हूं न अनर्थ शास्त्री और न कवि ही हूँ। तो यह काम जो कर सकते हों उन्हीं के सुपुर्द कर दिया जाय तो ही उत्तम रहेगा।

दूसरा विचार जो मैं प्रस्तुत करना चाहूंगा वह है कि यदि सरकार इस विषय पर हाथ धोना चाहे तो क्या इस मामले को समाप्त माना जाय? ऐसा होगा तो अनर्थ हो जायेगा। तब कौन इस मुद्दे को उठायेगा? मेरा मानना है कि तब कौन इस मुहिम को उठायेगा मेरा मानना है कि तब समाज के ईमानदार प्रबुद्ध वर्ग को मोर्चा संभालना चाहिए, मैं सहयोग देने के लिये तैयार हूँ। क्या ऐसा हो सकेगा? इसका उत्तर इसी **हिमाद्रि** पत्र में आना होगा,तो ही इस संवाद का कोई अर्थ होगा।

Srimanjari, Through War And Famine : Bengal 1939-1945, 2009, New Delhi

This work documents a very vital and a largely unexplored period of Indian history. After the Japanese occupation of Burma in March, 1942, Bengal or more specifically Calcutta became a very important base for Allied operations in the war against the Japanese. In a multi-dimensional study the author has explored the political, social and economic impact of the Second World War on Bengal. Political parties like the Hindu Mahasabha and the Muslim League had a limited mass base. Still they were able to survive because of the machinations of the colonial state. This study shows how these parties were able to increase their support because of cooperating with the British war effort. The British colonial state had developed the myth of the martial and non-martial races. The catchment area for the British Indian Army was Punjab. Due to the exigencies of war two million personnel were recruited. The catchment area had to be expanded. Hindu Mahasabha saw this as an oppurtunity to recruit more Bengali Hindus in order to get rid of the stigma that Bengalis are a non-martial race. The Muslim League also pressed for the recruitment of more Muslims in different branches of the government.In Bengal the land lord-peasant relationship had a communal dimension as the land-lords were Hindus and the peasantry was Muslim. The League also raised issues relating to land relations and was able to marginalize Fazlul Haque's Krishak Praja Party. There was a boom in industrial production but the industrial working class could not benefit as it had a low bargaining power. Inflation spiraeled but the wages remained stagnant. There are references to the growing popularity of Subhash Chandra Bose despite the British propaganda that he was a mere quisling as well as the activities of the parallel government established during the Quit India movement in Midnapore.

As the administrative machinery was geared to serve the war effort rural Bengal suffered a tragedy of catastrophic proportions. Food

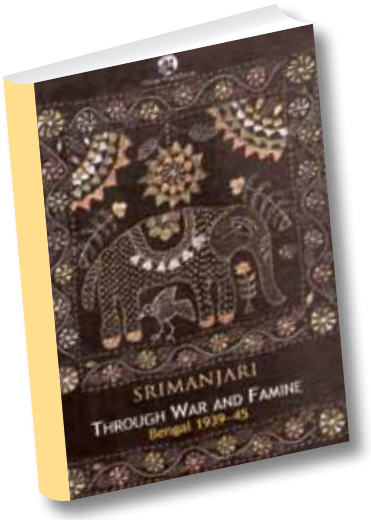

grains were stocked to cater to the needs of the army. Boats which were the main source of transporting food grains were commandeered by the army and the result was the Bengal famine. Rich empirical evidence has been produced to support the theory that the famine was essentially a man made tragedy. The attitude of the authorities towards the famine victims was callous. The sight of the victims dying on the pavements of Calcutta dented the prestige of the British Empire. By way of solution the colonial authorities decided to repatriate the famine victims who had been forced to come to the city in search of food. The callousness of the authorities was coupled with the indifference of the middle classes who were the beneficiaries of the boom in economic activities fuelled by the war.

The author has worked on this subject for almost 25 years. A variety of sources have been used to study a complex historical situation. Each component of this complex situation can be a subject of a separate book. This book can work as a good starting point for scholars interested in this period.

- Manoj Panjani

Books and the Youth of Mumbai

In the commercial capital of the country how do the youth spend their spare time. They would be hanging around in the multiplexes, foodcourts, discos, ontheir computers or laptops and yes even at the book shops. The Landmark book shop at Andheri West is one such place. Located inside a shopping mall it is patronized by the young. On a Sunday parents come with their children just like they would go to an amusement park. Customers put their purchases in baskets just as in any super market or large store. Young people working in the entertainment industry come to unwind whenever they are free. This is also the place where they sometimes make their contacts. Browsing is permited. There is a sofa where readers sit and browse for hours together. One girl by the name of Adishree was reading Mahadevi Verma's Deepshikha. She had come from Begusarai in Bihar and works as an assistant director in films. She said she writes poetry herself. Another girl was reading Bipan Chandra's India Since Independence.

She was an under graduate student who was studying English Literature, Economics and Political Science. She wanted to major in Political Science in preference to the other two subjects which apparently have greater scope. She wanted to make a career in international relations or policy planning. One look at the Landmark bookshop would once again shatter the myth that the youth is not interested in reading.

- Manoj Panjani

पुस्तकालय के प्रति पाठकों का बढ़ता रुझान

दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या में हर माह बढ़ोतरी हो रही है। यह परिणाम हमारे लिये अत्यन्त उत्साह जनक हैं। पुस्तकालय के दैनिक आगन्तुक पंजिका से प्राप्त आंकड़ों से इस बात की पुष्टि होती है कि माह जनवरी 2010 से जून तक पुस्तकालय में कुल 6542 पाठक आये। जून माह में सर्वाधिक 1210 पाठक पुस्तकालय में पहुंचे। जनवरी से जून तक के छः महीने में आने वाले 86 प्रतिशत पाठक पुस्तकालय के सदस्य तथा 14 प्रतिशत अन्य व्यक्ति थे। उपरोक्त संख्या केवल पुस्तकालय के सदस्यों व पहली बार पुस्तकालय के बारे में जानकारी प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की है। इसके अलावा दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र का वाचनालय सुबह 8:00 से सायं 8:00 बजे तक आम पाठकों से पूरी तरह खचा-खच भरा रहता है। जिसमें रोजाना 50 से 60 पाठक नियमित रुप से मौजूद रहते हैं। पुस्तकालय के वाचनालय में आने वाले ये पाठक यहां पर निशुल्क रुप से दैनिक समाचार पत्र व प्रतियोगिता सम्बन्धी विविध पत्रिकाओं का पठन-पाठन करते हैं। पुस्तकालय के प्रति पाठकों का बढ़ता यह रुझान हमारे लिये अत्यन्त उत्साह जनक है।

Visitors to the Doon Library on the Increase

Between January to June, 2010 the number of persons visiting the Doon Library was 6542. The sultry weather in the month of June did not dampen the spirit of our readers as 1210 persons visited the library. Young persons constitute an over whelming majority of the visitors.

पुस्तकालय में आने वाले कुल व्यक्ति

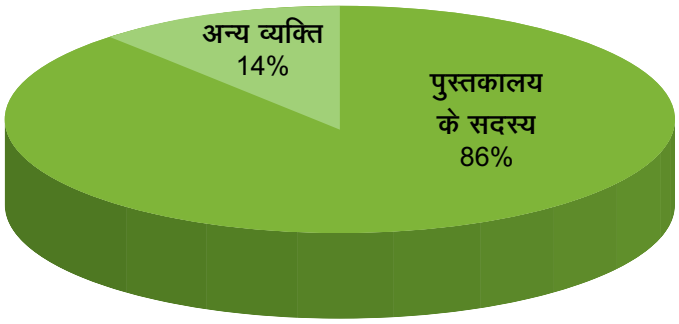

माह	पुस्तकालय आने वाले कुल व्यक्ति	पुस्तकालय के सद्स्य	अन्य व्यक्ति
जनवरी	991	787	204
फरवरी	951	768	183
मार्च	1166	1003	153
अप्रैल	1210	1085	125
मई	1053	934	119
जून	1171	1049	130

वर्ष 2010 में जनवरी से जून तक पुस्तकालय में आने वाले कुल व्यक्ति

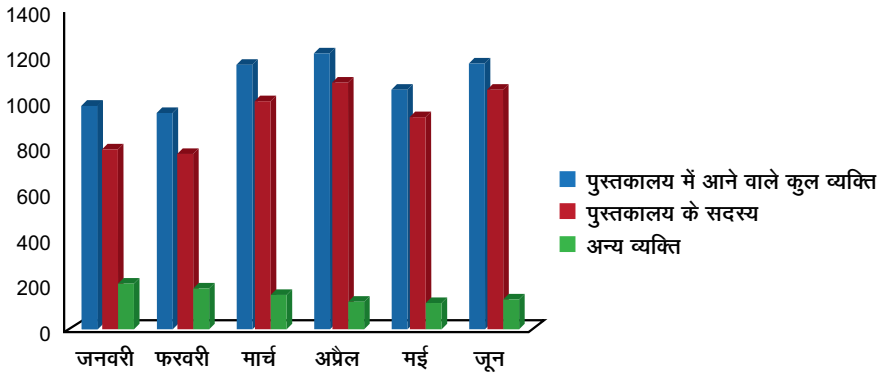

(प्रस्तुतिः प्रो. बी.के. जोशी एवं चन्द्रशेखर तिवारी)

DOON LIBRARY & Research Centre

Himadri is published by Dr B K Joshi on behalf of Doon Library & Research Centre, 21 Parade Ground, Dehradun 248001, Uttarakhand and printed at Shiva Offset Press, Dehra Dun. Ph: +91 135 2711485; Fax: +91 135 2713065;
E-mail: doonlib@yahoo.co.in; Website: www.doonlibrary.org